(ख) यदि हां, तो वर्ष 1995-96, 1996-97 और 1997-98 के दौरान रबी और खरीफ की फसलों के उपरोक्त उत्पादों का कितनी-कितनी मात्रा में उत्पादन हुआ है;

(ग) क्या उपरोक्त वर्षों के दौरान उक्त उत्पादों की औसत उत्पादन दर में भी कमी आई है; और

(घ) यदि हां, तो प्रत्येक में कितनी-कितनी कमी आई है और प्रत्येक वर्ष के दौरान प्रत्येक फसल मौसम में कितनी-कितनी भूमि पर आलू और प्याज की बुआई की गई थी?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) जी, नहीं। आलू और प्याज के उत्पादन में सामान्य रूप से वर्ष प्रति वर्ष वृद्धि होती रही है तथा 1996-97 में रिकार्ड उत्पादन हुआ है। फिर भी, 1997-98 के दौरान प्रतिकूल सस्य-जलवायवी परिस्थितियों की वजह से उत्पादन में कमी आई।

(ख) प्याज और आलू का अखिल भारतीय सरकारी अनुमान का मौसमवार परिकलन नहीं किया जाता है। फिर भी, पिछले तीन वर्षों के दौरान प्याज और आलू के कुल उत्पादन का प्राक्कलन निम्नलिखित है:—

(मिलियन मी० टन)

वर्ष	प्याज	आलू
1995-96	4.08	18.84
1996-97	4.43	25.07
1997-98*	3.68	19.20

*अग्रिम प्राक्कलन

(ग) और (घ) वर्ष 1997-98 में प्याज और आलू के क्षेत्र तथा उत्पादकता में कमी आई। वर्ष 1995-96, 1996-97 तथा 1997-98 के लिए प्याज तथा आलू के क्षेत्र तथा पैदावार के प्राक्कलन नीचे सारिणी में दिए गए हैं:—

क्षेत्र — मिलियन हैक्टे०
उपज — कि० ग्राम प्रति हैक्टे०

वर्ष	प्याज		आलू	
	क्षेत्र	उपज	क्षेत्र	उपज
1995-96	0.40	10316	1.11	16991
1996-97	0.41	10810	1.31	19176
1997-98*	0.39	9436	1.20	16000

*अग्रिम प्राक्कलन

कटी हुई फसल से अनाज

467. **श्री बलवंत सिंह रामूवालिया:**
श्री बग्गिन्दर सिंह:

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि इस समय देश में फसलों के कटने के बाद अनाज प्राप्त करने की जो विधि अपनाई जा रही है उसके कारण भारी मात्रा में खाद्यान्नों को हानि पहुंचने का अनुमान है;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने इस संबंध में कोई आकलन किया है;

(ग) यदि हां, तो इस हानि के संबंध में क्या आकलन है;

(घ) क्या सरकार ने उपर्युक्त हानि को रोकने के लिए किसानों द्वारा अपनाए जाने के लिए किसी नई तकनीक पर विचार किया है; और

(ङ) यदि हां, तो इस संबंध में विस्तृत ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोम पाल): (क) जी, हां।

(ख) और (ग) केन्द्रीय कटाई-पश्चात इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अनाजों के लिए कटाई-पश्चात हुई हानियों का अनुमान 10—12 प्रतिशत लगाया।

(घ) और (ङ) कटाई-पश्चात होने वाली हानियों को कम करने की दृष्टि से नई प्रौद्योगिकियां और उपकरण विकसित किए गए हैं और इनको प्रशिक्षण, प्रदर्शन आयोजित करके एवं प्रचार के माध्यम से लोकप्रिय बनाया गया है। ग्रेशरों, क्लीनरों, ग्रेडरों, शेलरों और डिकोर्टिकेटरों की खरीद के लिए किसानों को वित्तीय प्रोत्साहन भी उपलब्ध हैं।